नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक मंच पर भारत की मजबूत पहचान

पिछले कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति केवल औपचारिक राजनयिक संवाद तक सीमित नहीं रही है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया विदेश यात्राएं इस बदलते दृष्टिकोण की स्पष्ट तस्वीर पेश करती हैं. दिसंबर 2025 में जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान की यात्राओं से लेकर उससे पहले नाइजीरिया, गुयाना और भूटान तक–इन सभी दौरों ने यह संकेत दिया है कि भारत अब वैश्विक राजनीति में प्रतिक्रियाशील नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी भूमिका निभा रहा है.

सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि ओमान के साथ हुआ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता है. यह समझौता केवल व्यापारिक आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि भारत की आर्थिक महत्वाकांक्षाओं का ठोस आधार है. लगभग 98 प्रतिशत भारतीय उत्पादों पर शून्य शुल्क का प्रावधान भारतीय निर्यातकों के लिए नए द्वार खोलेगा. रत्न-आभूषण, कपड़ा, कृषि उत्पाद और एमएसएमई क्षेत्र को इससे सीधा लाभ मिलेगा. ऐसे समय में जब वैश्विक व्यापार संरक्षणवाद की ओर झुक रहा है, ओमान के साथ मुक्त व्यापार समझौता भारत की कूटनीतिक दूरदर्शिता को दर्शाता है.

जॉर्डन की यात्रा ने यह साबित किया कि भारत की विदेश नीति केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि संस्कृति और तकनीक का संतुलित मेल है. नवीकरणीय ऊर्जा और जल प्रबंधन पर हुए समझौते भारत को जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहयोगी नेटवर्क प्रदान करते हैं. वहीं पेत्रा और एलोरा के बीच हुआ 'ट्विनिंग' समझौता यह दिखाता है कि भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को सॉफ्ट पावर के रूप में वैश्विक स्तर पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर रहा है. अफ्रीका की बात करें तो इथियोपिया की यात्रा प्रतीकात्मक से कहीं अधिक व्यावहारिक महत्व रखती है. यह प्रधानमंत्री की पहली इथियोपिया यात्रा थी, जिसने भारत-अफ्रीका संबंधों को नई गति दी. भारत खुद को अफ्रीका के लिए केवल निवेशक नहीं, बल्कि विकास भागीदार के रूप में स्थापित कर रहा है- चाहे वह स्वास्थ्य, शिक्षा या डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का क्षेत्र हो. भूटान यात्रा ने 'पड़ोसी पहले' नीति को एक बार फिर ठोस रूप दिया. सीमा पार रेलवे संपर्क का प्रस्ताव केवल परिवहन परियोजना नहीं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की दिशा में बड़ा कदम है. इससे पूर्वोत्तर भारत को भी दीर्घकालिक लाभ मिलेगा.

ऊर्जा सुरक्षा के संदर्भ में नाइजीरिया और गुयाना के साथ बढ़ता सहयोग भारत के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. वैश्विक अनिश्चितताओं के दौर में ऊर्जा आपूर्ति के विविध स्त्रोत भारत की आर्थिक स्थिरता को मजबूती देंगे. इन सभी यात्राओं का समग्र संदेश स्पष्ट है- भारत अब केवल एक उभरता हुआ बाजार नहीं, बल्कि वैश्विक समाधान प्रदाता के रूप में आगे बढ़ रहा है. डिजिटल भुगतान प्रणाली (यूपीआई) का विस्तार हो या हरित ऊर्जा में नेतृत्व, भारत अपनी क्षमताओं के साथ वैश्विक जिम्मेदारियां भी निभा रहा है.

कुल मिलाकर, प्रधानमंत्री मोदी की ये विदेश यात्राएं भारत के 2047 के 'विकसित भारत' लक्ष्य की कूटनीतिक नींव मजबूत करती हैं. अब चुनौती यह है कि इन समझौतों का लाभ ज़मीन पर कितना तेज़ और प्रभावी रूप से उतरता है. यदि ऐसा हुआ, तो ओमान जैसे समझौते निश्चय ही भारतीय व्यापारियों और युवाओं की किस्मत बदलने वाले साबित होंगे.

नितिन (गडकरी) नहीं तो नबीन सही

राजीव खण्डेलवाल

140 वर्ष से अधिक पुरानी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका निभाई और स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक सत्ता का सुख भोगा. किंतु आपातकाल के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों पर आघात करने का दुष्परिणाम 'सत्ताच्युत' होकर होना पड़ा. वहीं, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जो न केवल देश की, बल्कि विश्व की सबसे बढ़ी सदस्य संख्या वाली राजनीतिक पार्टी है, का गठन वर्ष 1980 में हुआ. कांग्रेस की स्थापना जहाँ वर्ष 1985 में एक सेवानिवृत ब्रिटिश सिविल सेवक ए.ओ. ह्यूम ने की थी, वहीं भाजपा किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि 'संघ' की राजनैतिक अभिव्यक्ति रही है.

यहीं से भारतीय राजनीति में 'व्यक्तिवाद बनाम संघवाद' (फेडरलिज्म नहीं) की वैचारिक प्रतिस्पर्धा प्रारंभ होती है. भाजपा की 'मातृ वैचारिक संस्था' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), जो इस समय अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूर्ण कर जन्मशती मना रहा है, ने ही वर्ष 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की थी. इसके प्रथम अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे. 1975 के आपातकाल से उत्पन्न 1977 की राजनैतिक परिस्थितियों में कांग्रेस को पराजित करने हेतु जनसंघ को जनता पार्टी में विलीन होना पड़ा. परन्तु मात्र ढाई वर्ष के शासन (सत्ता) अनुभव से 'संघ' यह समझ गया कि यदि उसे अपने सिद्धांतों के अनुरूप देश का नेतृत्व करना है और 'हिंदुत्व के किले' को सुदृढ़ करना है, 'रामराज्य' की परिकल्पना को साकार रूप देना है, तो एक स्वतंत्र राजनीतिक दल का अस्तित्व अनिवार्य है.

परिणामस्वरूप जनसंघ से भाजपा के रूप में पुनर्जन्म हुआ. जनवरी 1980 के लोकसभा चुनाव के तत्काल बाद बनी (अप्रैल 1980) भाजपा का 1984 का लोकसभा चुनाव पहला राष्ट्रीय चुनाव था. दुर्भाग्यवश इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उपजी सहानुभूति लहर में भाजपा मात्र दो सीटें ही जीत सकी. किंतु

इसके बाद पार्टी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा- आज भाजपा जिस 'न भूतो न भविष्यति' के मुकाम पर खड़ी है, वहाँ उसके आसपास दूर-दूर तक कोई एकल राजनीतिक दल दिखाई नहीं देता. यद्यपि अनेक क्षेत्रीय दल 'अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग' अलापते हुए 'आभासी गठबंधन' बनाकर उसे चुनौती देने का प्रयास अवश्य कर रहे हैं जिसके कुछ परिणाम वर्ष 2024 के चुनाव में देखने को मिला भी. इस ऊँचाई पर पहुँच कर भाजपा ने राजनीति में ऐसे साहसिक प्रयोग किए, जो कांग्रेस अपार बहुमत होने की स्थिति में भी नहीं कर पाई. दिल्ली में अधिकांश विधायकों के टिकट बदल देना. गुजरात में मुख्यमंत्री सहित पूरा मंत्रिमंडल बदल देना. (सितम्बर 2021) गुजरात में ही अभी पूरा मंत्रिमंडल मुख्यमंत्री को छोड़कर बदल देना. (अक्टूबर 2025 में). राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का चुनाव. उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन का चुनाव. 'पर्ची प्रणाली' से मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री का चयन. यही प्रयोगधर्मिता भाजपा की 'सफल राजनीति' की पहचान बन गई.

इसी कड़ी में हाल ही में भाजपा ने बिहार के पांच बार के विधायक, राज्य सरकार के मंत्री और मात्र 45 वर्षीय नितिन नबीन को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त कर न केवल विपक्ष को भौंचक्का किया, बल्कि स्वयं पार्टी के भीतर भी वरिष्ठ नेताओं से लेकर कार्यकर्ताओं तक को चकित कर दिया. 45 वर्षीय युवा को राष्ट्रीय नेतृत्व की बागडोर सौंपना भाजपा की कांग्रेस के 83 वर्षी वर्षीय राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के लिए एक सोची समझी चुनौती पूर्ण राजनीति भी है. यह निर्णय कुछ हद तक नितिन गडकरी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की पुनरावृत्ति जैसा प्रतीत होता है, जब वे 52 वर्ष की आयु में इस दायित्व पर आसीन हुए थे. उस समय वे संघ मुख्यालय नागपुर के निकट व प्रिय थे.

वैसे सबसे कम उम्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष अटल जी रहे जो मात्र 44 वर्ष की उम्र में वर्ष 1968 में जनसंघ के अध्यक्ष बने थे. नितिन नबीन के विषय में कहा जाता है कि वे संघ और भाजपा दोनों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं. यही उनका सबसे बड़ा 'प्लस पॉइंट' (गुण) है. अनुभव, संगठन और संतुलन नितिन नबीन का राजनीतिक सफर संगठित, अनुशासित और कुछ अनुभव संपन्न रहा है. वे भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव, बिहार भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष, सिक्किम के प्रभारी एवं छत्तीसगढ़ के सह-प्रभारी रहे हैं.

वह बिहार विधानसभा के पांच बार निर्वाचित सदस्य और बिहार सरकार में दो बार मंत्री रहे हैं. हालिया बिहार विधानसभा चुनाव में भी उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि नितिन को भी यह कल्पना बिल्कुल नहीं थी कि उनकी उक्त सक्षम उपलब्धियां उन्हें भाजपा संगठन के इस सर्वोच्च पद तक पहुँचा देंगी.

(लेखक कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल नगर सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

मध्य क्षेत्र की डायरी

मुख्यमंत्री से एक गरीब पिता की गुहार

दिलीप झा

सीहोर पुलिस कानून के अनुसार काम नहीं कर रही. अगर कानून के रक्षक ही भक्षक बन जाएं तो फिर शासन व्यवस्था कैसे चलेगी, यह गंभीर सवाल है. इसलिए वर्तमान डीजीपी अशोक मकवाना को इस मामले को गंभीरता से देखना चाहिए ताकि पिछले चार वर्षों से न्याय के लिए दर-दर भटक रहे एक गरीब वृद्ध पिता को न्याय मिल सके.

कल्पना कीजिए कि राजधानी भोपाल के नजदीक सीहोर में पुलिस की कार्यशैली का यह हाल है तो बाकि दूरदराज जिलों में क्या चल रहा है, यह बताने की जरूरत नहीं है. क्योंकि इसकी बानगी अक्सर देखने को मिलती रहती है. सीहोर पुलिस इतनी बेलगाम हो गई कि एक गरीब के साथ इतनी क्रूरता से पेश आती है तो जाहिर है अपराधियों के साथ इनके याराना संबंध बन गए हैं. आइए पूरी कहानी वृतांत से बताते हैं कि आखिर एक टेलर मास्टर के साथ सीहोर पुलिस ने आखिर क्या व्यवहार किया कि वह सदमे में आ गया. वर्ष 2021 अर्थात् कोरोना काल के दौरान 5 जून की वह काली रात को वह जीवन भर कैसे भूल सकता है जिसने उसकी औलाद छीन ली है? अब वह बेसहारा हो गया है. टेलर मास्टर विजय कुमार बाघेला निवासी झागरिया कालोनी सीहोर ने मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव से गुहार लगाई है कि उनके बेटे की हत्या के मामले की सीबीआई जांच कराई जाए ताकि सीहोर पुलिस का घिनौना कारनामा लोगों के सामने आए कि किस तरह हत्या को दुर्घटना करार दिया.

विजय बाघेला ने पुलिस को दिए कथन में यह स्पष्ट कहा है कि उनके बेटे को एक महिला के साथ नाजायज रिश्ते में फंसाया गया और बाद में उसकी पीट पीटकर हत्या कर दी गई लेकिन पुलिस इसके तह तक जाने के बजाय उन्हें ही प्रताड़ित कर रही है. टेलर मास्टर विजय का दर्द यह है कि आज तक उनके बेटे की हत्या की जांच आगे नहीं बढ़ी है. विजय ने यह भी आरोप लगाया कि पुलिस मामले को दबाने का प्रयास कर रही है और उन्हें भद्दी-भद्दी गालियां दे रही है. ऐसे में उनका जीवन नर्क हो गया है.

सीहोर पुलिस के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक और उसके अधीनस्थ अधिकारियों की कार्यशैली पर यह बड़ा आरोप है कि उसने एक गरीब टेलर मास्टर के बेटे की हत्या को दुर्घटना बता दिया और हत्यारे के साथ मिलकर एक अलग कहानी बना दी. पुलिस प्रशासन को ऐसे मामले की जांच गंभीरता से करनी चाहिए ताकि जघन्य अपराध करने वालों पर शिकंजा कसा जा सके.

एमपी के प्राइवेट विश्वविद्यालय में धांधली

मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री कार्यकाल में उच्च शिक्षा विभाग के मंत्री रहे डॉक्टर मोहन यादव अब प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं. जाहिर है उच्च शिक्षा विभाग में क्या चल रहा है, इससे वह पूरी तरह वाकिफ हैं. बावजूद इसके उच्च शिक्षा विभाग में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है. इसमें सबसे खराब स्थिति प्राइवेट विश्वविद्यालय की है. नाम के लिए निजी विश्वविद्यालय आयोग बना है. सूत्रों का कहना है कि निजी विश्वविद्यालय आयोग अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर सकता है क्योंकि उन्हें भी अपना काम नहीं करने दिया जा रहा है. पूरे प्रदेश में निजी विश्वविद्यालय के नाम पर बहुत बड़ा गोरखधंधा चल रहा है. यूजीसी के नियम कानून तो यहां ताक पर रख दिया गया है. हर साल लाखों छात्र इन प्राइवेट विश्वविद्यालय में दाखिला लेते हैं लेकिन वे गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हासिल करने में असफल हो जाते हैं. क्योंकि प्राइवेट विश्वविद्यालय में फैकल्टी की व्यवस्था चरमरा गई है. आलम यह है कि यूजीसी के मानक पर यहां के विश्वविद्यालय फिट नहीं बैठ रहे हैं लेकिन विडंबना है कि फिर भी इनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती है. प्रदेश के सभी निजी विश्वविद्यालयों में गोरखधंधा जोरों पर है. लाखों छात्र हर साल बाहर के राज्यों से भी यहां आते हैं लेकिन उन्हें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नसीब नहीं होती है. निजी विश्वविद्यालय वाले एक एक स्टूडेंट से 5 से 10 लाख की फीस लेते हैं इंजीनियर और डाक्टर बनाने के लिए लेकिन, लास्ट सेमेस्टर तक देश की प्रमुख कंपनियों में प्लेसमेंट नहीं करवा पाते हैं. सूत्र बताते हैं कि इसके पीछे भी भ्रष्टाचार का हाथ है. सभी विश्वविद्यालय में बने प्लेसमेंट सेल में कार्यरत लोग निर्थक और भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए हैं. सूत्र यह भी बताते हैं कि प्लेसमेंट कराने वाले विश्वविद्यालय के कर्मी एक लाख से दो लाख रुपये स्टूडेंट्स से प्लेसमेंट के नाम पर लूट लेते हैं. प्लेसमेंट के नाम पर धोखाधड़ी कर युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों पर सरकार का सिस्टम शिकंजा कसने में कारगर नहीं है. जिस युवा के हाथों में देश की बागडोर होगी उसे अगर भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण नहीं मिलेगा तो उनसे बेहतर नेतृत्व की उम्मीद बेईमानी होगी.

सभी के लिए बीमा सुरक्षा का लक्ष्य

देश के बीमा क्षेत्र में सुधार लाने के उद्देश्य से लोकसभा ने 'सबको बीमा सबको सुरक्षा' विधेयक पारित किया. इसमें 3 पुराने बीमा कानूनों में फेरबदल किया गया. ये कानून थे- 1938 का बीमा अधिनियम, 1956 का जीवन बीमा निगम अधिनियम तथा 1999 का बीमा नियमन और विकास प्राधिकरण अधिनियम. इस कदम का उद्देश्य 2047 तक सभी के लिए बीमा के लक्ष्य को हासिल करना है. पिछले दशक में बीमा कराने वाले व्यक्तियों की तादाद बढ़ी है. इसी तरह औसत वार्षिक बीमा प्रीमियम में भी वृद्धि हुई है. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में बीमा प्रीमियम का योगदान 3.3 प्रतिशत से बढ़कर 3.7 प्रतिशत हो गया है. इतने पर भी बहुत से लोग बीमा कवर से वंचित हैं. विश्व की प्रमुख 25 बीमा कंपनियां भारत में अपना व्यवसाय नहीं करतीं. विश्व औसत का केवल 0.6 प्रतिशत बीमा भारत में कराया जाता है. यह विधेयक इसी कमी को पूरा करने के लिए है. जहां तक लोगों की मानसिकता है वहआज भी निजी बीमा कंपनियों की बजाय एलआईसी पर ज्यादा भरोसा करते हैं. सरकार का उद्देश्य भारतीय बीमा कंपनियों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश वर्तमान 74 प्रतिशत से बढ़ाकर 100 प्रतिशत करना है. आशा है इस कदम की वजह से और अधिक विदेशी निवेश आएगा. तकनीकी हस्तांतरण में सुविधा होगी तथा सामाजिक सुरक्षा में वृद्धि होगी. बाजार के विस्तार के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियम उदार बनाए गए हैं. विदेशी बीमा कंपनियां अब अपनी सममूल्य पूंजी तथा मुक्त आरक्षित राशि 5,000 करोड़ से घटाकर 1,000 करोड़ कर सकेंगी. इस तरह की शिथिलता देने से नई व छोटी विदेशी बीमा कंपनियां भारतीय बाजार में आ सकेंगी. इससे प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी तथा सेवा में सुधार होगा. यह विधेयक आईआरडीएआई (इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी ऑफ इंडिया) की भूमिका को विस्तारित करता है और सेबी के समान अधिकार देता है.

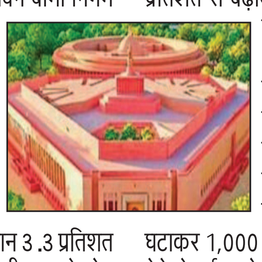

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सारे मर्ज की एक ही दवा चलने लगी चुनाव की हवा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, स्थानीय स्वराज संस्थाओं के चुनाव का लंबे समय बाद मुहूर्त निकला और अब महापालिका चुनाव होने जा रहे हैं. इस चुनाव में किस पार्टी या गठबंधन की नाव किनारे लगेगी. कौन डूबेगा और किसका बेड़ा पार होगा? हमें निशाना लगाकर बताइए कि चुनाव में कैसी हवा चल रही है. हवा के दबाव के बारे में कुछ बताइए.'

हमने कहा, 'हवा कभी दिखाई नहीं देती. जो चीज दिखाई न दे, उसके बारे में कैसे बताएं! हवा सिर्फ महसूस की जाती है. हवा न हो तो वायुमंडल ही न हो. देहात के लोग भी जानते हैं कि नीम के झाड़ की हवा फायदेमंद होती है जबकि इमली के झाड़ की हवा लगने से आदमी बीमार पड़ जाता है. जिन लोगों में स्वदेशी की भावना होती है, वे कहते हैं- देश की मिट्टी देश की हवा, देश का पानी देश की दवा!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम आपसे चुनावी हवा के बारे में पूछ रहे हैं चुनाव की बयार में कौन किसका यार है और किसे जनता से सच्चा प्यार है? यह हवा किसके पक्ष में बह रही है?'

हमने कहा, 'किसी वैज्ञानिक से पूछिए. हवा हमेशा मिश्रित रहती है. उसमें हर प्रकार की गैस ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाई ऑक्साइड, हीलियम, क्लोरीन, मिथेन और अमोनिया पाई जाती है. आप जो पानी पीते हैं वह भी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिलने से बना है. मनुष्य सहित सभी जीवधारी हवा में से ऑक्सीजन ले लेते हैं जबकि पेड़-पौधों को कार्बन डाई ऑक्साइड चाहिए.' पड़ोसी ने नाराज होकर कहा, 'निशानेबाज, आपको चुनावी हवा के संबंध में बताना है या नहीं?'

हमने कहा, 'चुनावी हवा नेताओं के लिए प्राण वायु का काम करती है बशर्ते वह उनके पक्ष में चले. इस हवा में लुभावने वादों की गुलाबी सुगंध समाई रहती है. इसमें सम्मोहन के इत्र की खुशबू होती है. जिस पार्टी की चुनावी हवा में घनत्व ज्यादा होता है वह वोटों की बारिश करा देती है. चुनावी हवा चाहे जिस पार्टी की हो, उसमें हवा-हवाई आश्वासन शामिल होते हैं. वह जनमानस को छूते हुए ईवीएम में समा जाती है. आगे चलकर नतीजे ही बताएंगे कि हवा किसके पक्ष में थी.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12116

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2	■	3	4	■	5
	■	6				7	
8			■		■		■
	■	9	10		■	11	12
■	13			■	14		
15		■	16				■
17			■	■		■	18
19		■	20				

ऊपर से नीचे
1. यात्री, सफर करने वाला (ई) 2. किसी घटना की जांच, अनुसंधान (उर्दू) 3. उजाड़ जगह, जंगल 4. नारी, नाड़, गर्दन 5. धीमा, सुस्त 7. तोरणद्वार पर डोरी से लटकाए हुए पत्ते आदि 10. नवीन, नया 12. गाडर नामक घास की सुगंधित जड़ जिसकी गर्मियों में कमरे को ठंडा करने के लिए पर्दे और टट्टियां बनती हैं। 13. संवाद, खबर, हाल 14. जरूरी 15. स्याही रखने का छोटा पात्र (उर्दू) 18. स्वर्ण, नींद लेना

बाएं से दाएं
1. समय, अवधि, अरसा, मीआद (उर्दू) 3. छोड़कर, बगैर 6. सशस्त्र, जो हथियार धारण किए हुए हो 8. धागा लपेटने की रील, चकरी नामक खिलौना 9. विधि, राजनियम 11. नाखून 13. निरंतर, लगातार, सर्वदा 14. निवास स्थान, घर, मकान 15. सांस की एक बीमारी 16. नटकला में प्रवीण व्यक्ति, श्रीकृष्ण 17. बोलने में तेज, व्यर्थ बकने वाला (सं.) 19. गीला, आर्द्र (उर्दू) 20. कड़कड़ शब्द करना या होना

Solution 12115

तु	ल	सी	द	ल	■	आ	का
ला	ख	■	श	ता	व	धा	न
■	प	■	ह	ड़	■	रि	पु
स	ती	चौ	रा	■	का	त	र
व्य	■	मा	■	मा	या	■	■
सा	ज	सा	मा	न	■	ब	क
ची	र	■	■	सि	र	हा	ना
■	द	र्श	नि	क	■	र	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. भाईयों का सहयोग व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में राजनीति में अत्याधिक परिश्रम के कारण कष्ट होगा. मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद के कारण मन व्यथित रहेगा. वर्ष के अन्त में शासन सत्ता से लाभ होगा. स्वजनों से सहयोग व अनुबंध होंगे.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंका नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियोंको स्वजनों से सहयोग नवीन अनुबंध होंगे. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद से मन व्यथित रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला, लंबे कद का परिश्रमी होगा, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, 32 वर्ष की आयु में भाग्योदय करेगा, ये राजकीय कार्यो में सफलता प्राप्त करेगा, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा, ये स्वाभिमानी के साथ साथ क्रोधी भी होते हैं.

उदयकालीन ग्रह चाल

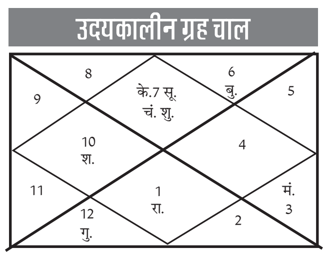

मेष- संबंध सुधारने के लिये पहल करेंगे, आलोचना करना ठीक नहीं है, आपकी उपयुक्त बात का महत्व मिलेगा, लाभ होगा. निराशा का अन्त होगा.

वृषभ- अनावश्यक खर्च से चिन्ता होगी, विरोधी परेशान कर सकते हैं, ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे आपको अपमान का सामना करना पड़े.

मिथुन- कार्यशैली से अधीनस्थ नाराज होंगे, युवाओं को नौकरी रोजगार में सफलता मिलेगी, यश मिलेगा. वाद विवाद से बचें. खर्च की अधिकता रहेगी.

कर्क- अनावश्यक खर्च से चिन्ता होगी, अनुभवी लोगों का साथ लाभकारी रहेगा, नई परेशानी के आने से आपका महत्वपूर्ण काम रूक सकता है, सावधानी से कार्य करें.

सिंह- आकस्मिक लाभ होगा, दाम्पत्य सुख मिलेगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी, नवीन योजना बनेगी. अधिकारी वर्ग आपके उपर भरपूर कृपा करेंगे.

कन्या- सहयोगियों से परेशानी होगी. मधुर वाणी से सबका दिल जीत लेंगे, संबंधों में मधुरता आयेगी, कुछ कार्यो में नया रूप देने की योजना बनेगी.

तुला- महत्वपूर्ण कार्यों में आम राय से काम करें, अपनों के कारण नीचा देखना पड़ सकता है, प्रतिष्ठितजनों से भेंटवार्ता होगी, पुरानी परेशानी का समाधान होगा.

वृश्चिक- आफिस की परेशानी से कार्य प्रभावित हो सकता है, बुजुर्गो की मदद से विवाद हल होगा, धन लाभ होने का योग है, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

धनु- दिखावे के कारण परेशानी होगी, मित्रों की मदद से लक्ष्य हासिल कर लेंगे, लापरवाही करने से हानि हो सकती है, वाद विवाद से बचें.

मकर- जरूरी कार्य पहले करें, प्रियजन से मुलाकात उपयोगी रहेगी, रूके कार्य में गति आयेगी, स्वास्थ्य में ताजगी और स्फूर्ति रहेगी.

कुम्भ- घरेलू आयोजन सुखद रहेंगे, दूर-दराज या विदेश में अध्ययन का अवसर मिलेगा, ज्यादा भागदौड़ नुकसानदायक रहेगी, संभलकर कार्य करें.

मीन- पुराना विवाद पक्ष में सुलझेगा, काम पूरा करने में व्यस्त रहेंगे, कल की अपेक्षा आज के कार्यो में ध्यान देना हितकर रहेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी.

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2082 पौष शुक्ल प्रतिपदा शनिवासरे दिन-रात, मूल नक्षत्रे रात 1/13, गण्ड योगे शाम 4/54, किंस्तुघ्न करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल प्रतिपदा को मूल नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड़, शक्कर, के भाव में तेजी होगी, सोना, चांदी, के भाव में समता रहेगी, जीरा, धनियां, सौंप, सौंठ, अजवाईन, आदि के भाव में साधरण मंदी होगी. भाग्यांक 3938 है.

SUDOKU 7248

2						5		
	1			8				9
7					4			
			9			1		
	3						6	
		8			5			
			3					8
5				6			2	
		4						7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7247

2	3	6	8	5	1	4	9	7
9	4	5	7	6	3	8	2	1
1	7	8	2	9	4	6	5	3
3	1	9	6	7	2	5	4	8
5	6	2	1	4	8	3	7	9
7	8	4	5	3	9	1	6	2
4	9	1	3	2	5	7	8	6
8	2	7	4	1	6	9	3	5
6	5	3	9	8	7	2	1	4